सिविल सेवा परीक्षा...

संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

कला एवं संस्कृति

भाग-1

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

सिविल सेवा परीक्षा...

संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

कला एवं संस्कृति

भाग-1

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

9555-124-124 sanskritiiasedu@gmail.com

प्रिय विद्यार्थी,

सबसे पहले संस्कृति IAS के 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' का हिस्सा बनने पर आपको बहुत बधाई।

सिविल सेवा परीक्षा, जिसे आई.ए.एस. परीक्षा के नाम से जाना जाता है; यह देश की प्रतिष्ठित लोक सेवाओं में चयन के लिये आयोजित होने वाली सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगी परीक्षा है। आज देश में युवाओं की एक बड़ी संख्या है जो सिविल सेवाओं में जाकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहते हैं। परंतु, गंभीरतापूर्वक इस परीक्षा की तैयारी करना हर किसी के लिये संभव नहीं हो पाता। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि इस परीक्षा की तैयारी के लिये दिल्ली, प्रयागराज या लखनऊ जैसे शहरों में रहना किसी भी निम्न-मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी के लिये संभवप्राय नहीं होता; दूसरा, एक बड़ी संख्या ऐसे विद्यार्थियों की भी है जो पहले से नौकरी कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों के लिये मुख्य समस्या समय की होती है क्योंकि कोचिंग संस्थान में जाकर तैयारी करने में डेढ़-दो वर्ष का समय लगता है, जबकि नौकरी से इतनी लंबी छुट्टी मिलनी प्राय संभव नहीं होती।

ऐसे ही विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति IAS ने 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' की शुरुआत की है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, कम फीस में विद्यार्थियों को किसी भी कोर्स की पूरी पाठ्य सामग्री उनके घर पर भेजी जाती है। यह पाठ्य सामग्री सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप होती है। अगर कोई विद्यार्थी गंभीरता से इस पाठ्य सामग्री का अध्ययन करता है तो उसकी इतनी तैयारी निश्चित रूप से हो जाएगी कि वह सिविल सेवा परीक्षा को पास कर सके।

हालाँकि, किसी भी विद्यार्थी के दिमाग में यह संशय उत्पन्न होना स्वभाविक है कि अगर इस पाठ्य सामग्री को पढ़कर यह परीक्षा पास हो सकती है तो फिर कोचिंग संस्थान में पढ़ाई करने की क्या आवश्यकता है? अत: यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत आपको सिर्फ संपूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। क्लासरूम प्रोग्राम में पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त विद्यार्थी की तैयारी को प्रभावी बनाने के लिये कई तरह के कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जैसे नियमित कक्षा, क्लास टेस्ट, टेस्ट सीरीज़, शंका निवारण सत्र, नियमित रूप से अध्यापक से मिलकर तैयारी को बेहतर बनाने की सुविधा इत्यादि।

अत: 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' को क्लासरूम प्रोग्राम का विकल्प नहीं कहा जा सकता है। यद्यपि, ऐसे विद्यार्थी जो किसी कारणवश दिल्ली या प्रयागराज जैसे शहरों में जाकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी नहीं कर सकते हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिये 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' अपनी प्रकृति में निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ विकल्प है।

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक, उससे किसी व्यक्ति विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- © कॉपीराइट: संस्कृति पब्लिकेशन्स, सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	भारतीय संस्कृति : एक परिचय	1-23
2	भारतीय विरासत का संरक्षण	24-33
3	भारतीय स्थापत्य कला	34-86
4	मूर्तिकला	87-115
5	भारतीय चित्रकला	116-143
6	भारतीय नृत्यकलाएँ	144-166

❑❑❑❑❑

विस्तृत अनुक्रम

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	**भारतीय संस्कृति : एक परिचय**	**1-23**
	• संस्कृति का अर्थ ➤ संस्कृति का नीतिशास्त्रीय अर्थ ➤ संस्कृति का ऐतिहासिक अर्थ ➤ संस्कृति का मानवशास्त्रीय अर्थ ➤ संस्कृति की विशेषताएँ • संस्कृति के प्रकार ➤ भौतिक संस्कृति ➤ अभौतिक संस्कृति ➤ भौतिक व अभौतिक संस्कृति में अंतर • संस्कृति के घटक • सभ्यता और संस्कृति में तुलनात्मक अध्ययन • संस्कृति एवं धर्म के बीच अंतर्संबंध • भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ ➤ पुरातनता ➤ निरंतरता ➤ सहिष्णुता ➤ लचीलापन एवं समन्वयवादिता ➤ ग्रहणशीलता ➤ आध्यात्मिकता ➤ सर्वांगीणता एवं सार्वभौमिकता ➤ विभिन्नता में एकता • भारतीय संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ ➤ वर्ग-विभेद ➤ क्षेत्रवाद ➤ भाषावाद ➤ संप्रदायवाद ➤ उग्र-राष्ट्रवाद **भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार** • भूमिका • भारतीय संस्कृति के प्रसार में सहायक तत्त्व • दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार ➤ श्रीलंका ➤ बर्मा ➤ वियतनाम ➤ कंबोडिया ➤ मलेशिया ➤ थाईलैंड ➤ इंडोनेशिया • मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार • पूर्वी एशियाई देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार ➤ चीन ➤ तिब्बत • विश्व के अन्य भागों में भारतीय संस्कृति का प्रसार ➤ रोम ➤ अरब	
2	**भारतीय विरासत का संरक्षण**	**24-33**
	• परिचय • विरासत के संरक्षण की आवश्यकता • कानूनी या वैधानिक प्रावधान • संवैधानिक प्रावधान • सांस्कृतिक संस्थाएँ • अन्य प्रयास ➤ इसरो नक्शा और प्रबंधन योजना ➤ भारतीय विरासत संस्थान • विरासतों के संरक्षण हेतु किये गए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास ➤ अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ– आई.यू.सी.एन. ➤ यूनेस्को ➤ यूनेस्को द्वारा विश्व विरासतों का वर्गीकरण	

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
3	**भारतीय स्थापत्य कला**	**34-86**

- परिचय

प्राचीन भारत की स्थापत्य कला

- हड़प्पाई स्थापत्य कला
  - हड़प्पाकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएँ
  - हड़प्पाई नगरीकरण की विरासत
  - हड़प्पा सभ्यता के कुछ महत्त्वपूर्ण स्थल और उनकी पुरातात्त्विक प्राप्तियाँ
- स्तूप स्थापत्य कला
  - स्तूप के प्रकार
  - स्तूप स्थापत्य कला का ऐतिहासिक विकास
  - प्रसिद्ध स्तूप
- चैत्य स्थापत्य कला
  - प्रसिद्ध चैत्य
- गुहा स्थापत्य कला
  - मौर्यकालीन गुहा स्थापत्य कला
  - गुप्त एवं गुप्तोत्तरकालीन गुहा स्थापत्य कला
- मंदिर स्थापत्य कला
  - मंदिर विकास के चरण
  - हिंदू मंदिर के आवश्यक घटक
  - मंदिर स्थापत्य शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन
  - नागर स्थापत्य कला
  - नागर स्थापत्य कला की उपशैलियाँ
  - द्रविड़ स्थापत्य कला
  - द्रविड़ स्थापत्य कला की उपशैलियाँ
  - वेसर स्थापत्य कला

मध्यकालीन भारत की स्थापत्य कला

- इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएँ
- दिल्ली सल्तनतकालीन स्थ. ापत्य कला
  - मामलुक स्थापत्य कला
  - खिलजी स्थापत्य कला
  - तुगलक स्थापत्य कला
  - सैयद और लोदीकालीन स्थापत्य कला
  - प्रांतीय स्थापत्य कला
- मुगलकालीन स्थापत्य कला
  - बाबर एवं हुमायूँकालीन स्थापत्य कला
  - अकबरकालीन स्थापत्य कला
  - जहाँगीरकालीन स्थापत्य कला
  - शाहजहाँकालीन स्थापत्य कला
  - औरंगज़ेबकालीन स्थापत्य कला
  - प्रांतीय स्थापत्य कला

आधुनिक भारत की स्थापत्य कला

- आधुनिक स्थापत्य कला पर प्रभाव
  - पुर्तगाली प्रभाव
  - फ्राँसीसी प्रभाव
  - ब्रिटिश प्रभाव
- आधुनिक स्थापत्य कला की शैलियाँ
  - इंडो-गोथिक शैली
  - नव-रोमन शैली

स्तंभ स्थापत्य कला

- अशोककालीन स्तंभों और अक्खमनी स्तंभों का तुलनात्मक अध्ययन
- महत्त्वपूर्ण मौर्यकालीन स्तंभ

4	**मूर्तिकला**	**87-115**

- परिचय
- सिंधुकालीन मूर्तिकला
  - मृण्मूर्तियाँ
  - धातु मूर्तियाँ
  - प्रस्तर मूर्तियाँ
  - मृद्भाँड
  - मुहरें
  - आभूषण
- मौर्यकालीन मूर्तिकला
- मौर्योत्तरकालीन मूर्तिकला
  - शुंगकालीन मूर्तिकला
  - सातवाहनकालीन मूर्तिकला
  - कुषाणकालीन मूर्तिकला
    - गांधार मूर्तिकला
    - मथुरा मूर्तिकला
- गुप्तकालीन मूर्तिकला
- गुप्तोत्तरकालीन मूर्तिकला
  - चालुक्य शैली
  - राष्ट्रकूट शैली
  - पाल शैली
  - पल्लव शैली
  - चोल शैली
  - होयसल शैली
  - ओडिशा शैली
  - खजुराहो शैली
  - विजयनगर शैली
  - नायक शैली
  - राजपूत शैली
  - दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय मूर्तिकला
- बुद्ध से संबंधित विभिन्न मुद्राएँ
- विभिन्न अवस्थाओं में मूर्तियाँ

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
5	**भारतीय चित्रकला**	**116-143**
	• भूमिका • भारतीय चित्रकला की विशेषताएँ • भारतीय चित्रकला का सिद्धांत • प्रागैतिहासिक चित्रकला • हड़प्पाकालीन चित्रकला • प्राचीनकालीन भित्ति चित्रकला ➤ भित्ति चित्रकला की तकनीक ➤ अजंता चित्रकला ➤ बाघ चित्रकला ➤ बादामी चित्रकला ➤ सित्तनवासल चित्रकला ➤ एलोरा चित्रकला ➤ आर्मामलई चित्रकला ➤ रावण छाया आश्रय चित्रकला ➤ तंजौर चित्रकला ➤ लेपाक्षी चित्रकला ➤ जोगीमारा चित्रकला • लघु चित्रकला ➤ पाल लघु चित्रकला ➤ पश्चिम भारतीय लघु चित्रकला ➤ सल्तनतकालीन लघु चित्रकला ➤ मुगलकालीन लघु चित्रकला ➤ दक्कन लघु चित्रकला • मध्य भारत और राजस्थानी चित्रकला ➤ मालवा चित्रकला ➤ मेवाड़ चित्रकला ➤ बूंदी चित्रकला ➤ कोटा चित्रकला ➤ किशनगढ़ चित्रकला ➤ बीकानेर चित्रकला ➤ मारवाड़ चित्रकला ➤ आमेर-जयपुर या ढूंढाड़ चित्रकला ➤ मुगल एवं राजपूत चित्रकला में अंतर • पहाड़ी चित्रकला ➤ बसौली चित्रकला ➤ गुलेर चित्रकला ➤ काँगड़ा चित्रकला ➤ कुल्लू-मंडी चित्रकला • आधुनिक चित्रकला ➤ कंपनी चित्रकला ➤ बाज़ार चित्रकला ➤ बंगाल चित्रकला • लोक चित्रकला ➤ कालीघाट चित्रकला ➤ ओडिशा के पट्टचित्र ➤ नाथद्वारा के पट्टचित्र ➤ मधुबनी चित्रकला ➤ वरली चित्रकला ➤ कालमेजुथु चित्रकला ➤ कोहवर और सोहरई चित्रकला ➤ फड़ चित्रकला ➤ गोंड चित्रकला ➤ कलमकारी चित्रकला	
6	**भारतीय नृत्यकलाएँ**	**144-166**
	• पृष्ठभूमि • नृत्य के स्वरूप • भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ ➤ भरतनाट्यम ➤ कुचिपुड़ी ➤ कथकली ➤ मोहिनीअट्टम ➤ ओडिसी ➤ मणिपुरी ➤ कथक ➤ सत्रिय • भारत के लोकनृत्य	

❑❑❑❑❑

इकाई

1

भारतीय संस्कृति : एक परिचय
(Indian Culture : An Introduction)

- संस्कृति का अर्थ
  - संस्कृति का नीतिशास्त्रीय अर्थ
  - संस्कृति का ऐतिहासिक अर्थ
  - संस्कृति का मानवशास्त्रीय अर्थ
  - संस्कृति की विशेषताएँ
- संस्कृति के प्रकार
  - भौतिक संस्कृति
  - अभौतिक संस्कृति
  - भौतिक व अभौतिक संस्कृति में अंतर
- संस्कृति के घटक
- सभ्यता और संस्कृति में तुलनात्मक अध्ययन
- संस्कृति एवं धर्म के बीच अंतर्संबंध
- भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ
  - पुरातनता
  - निरंतरता
  - सहिष्णुता
  - लचीलापन एवं समन्वयवादिता
  - ग्रहणशीलता
  - आध्यात्मिकता
  - सर्वांगीणता एवं सार्वभौमिकता
  - विभिन्नता में एकता
- भारतीय संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ
  - वर्ग-विभेद
  - क्षेत्रवाद
  - भाषावाद
  - संप्रदायवाद
  - उग्र-राष्ट्रवाद

भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार

- भूमिका
- भारतीय संस्कृति के प्रसार में सहायक तत्त्व
- दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार
  - श्रीलंका
  - बर्मा
  - वियतनाम
  - कंबोडिया
  - मलेशिया
  - थाईलैंड
  - इंडोनेशिया
- मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार
- पूर्वी एशियाई देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार
  - चीन
  - तिब्बत
- विश्व के अन्य भागों में भारतीय संस्कृति का प्रसार
  - रोम
  - अरब

संस्कृति का अर्थ (Meaning of Culture)

- संस्कृति शब्द सम् उपसर्ग, कृ धातु और क्तिन् प्रत्यय से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– वह कार्य जो भली प्रकार से किया गया हो तथा अलंकृत एवं विभूषित हो। इस प्रकार, संस्कृति किसी अवस्था के परिष्कृत स्वरूप को प्रदर्शित करती है।
- जब कोई सभ्यता एक विशेष प्रकार के बौद्धिक उत्कर्ष को प्राप्त कर लेती है, तब वह साहित्य, दर्शन, कला, विज्ञान आदि सभी पक्षों में अलंकृत और परिष्कृत हो जाती है। सभ्यता का यही स्वरूप अपने विशिष्ट अर्थ में संस्कृति कहलाता है।
- अंग्रेज़ी में संस्कृति के लिये 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो लैटिन भाषा के 'कल्ट' या 'कल्टस' से लिया गया है। इस शब्द के विभिन्न अर्थों में से एक है– परिष्कार (Refinement) अर्थात् बौद्धिक विकास और उन्नति। इस प्रकार संस्कृति बौद्धिक विकास या आत्मिक प्रगति से संबंधित है।
- रेडफील्ड के अनुसार, "संस्कृति, कला और वास्तुकला में स्पष्ट होने वाले परंपरागत ज्ञान का वह संगठित स्वरूप है जो परंपरा द्वारा संरक्षित होकर मानव-समूह की विशेषता बन जाता है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज,

5. अभौतिक संस्कृति की अपेक्षा भौतिक संस्कृति शीघ्र ग्राह्य है। जब दो भिन्न संस्कृति समूह संपर्क में आते हैं, तो एक-दूसरे की भौतिक संस्कृति शीघ्र स्वीकार कर ली जाती है, बजाय उनकी प्रथाओं एवं रीति-रिवाजों के।
6. भौतिक संस्कृति के मूर्त होने से इसकी सरलता से माप-तौल की जा सकती है, जबकि अभौतिक संस्कृति के अमूर्त होने से इसकी माप-तौल नहीं की जा सकती।
7. भौतिक संस्कृति सरल होती है, जबकि अभौतिक संस्कृति की प्रकृति जटिल है।
8. भौतिक संस्कृति संचयी होती है, आविष्कारों के कारण इसमें वृद्धि होती जाती है, जबकि अभौतिक संस्कृति में भौतिक संस्कृति के समान संचय एवं वृद्धि नहीं होती है।
9. भौतिक संस्कृति का मूल्यांकन लाभ एवं उपयोगिता के आधार पर किया जाता है। दूसरी ओर,अभौतिक संस्कृति का मूल्यांकन भौतिक वस्तुओं की तरह उपयोगिता से नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसका संबंध मानव के आत्मिक पक्ष से है, जिसे महसूस किया जा सकता है, किंतु मापा नहीं जा सकता।

भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति में अंतर	
भौतिक संस्कृति	**अभौतिक संस्कृति**
• यह संस्कृति का मूर्त रूप है। • यह सामान्यत: परिमेय होती है। • इसकी उपयोगिता एवं लाभ का मूल्यांकन किया जा सकता है। • इसमें परिवर्तन अपेक्षाकृत तीव्र होता है।	• यह संस्कृति का अमूर्त रूप है। • यह अपरिमेय होती है। • इसकी उपयोगिता एवं लाभ का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। • इसमें परिवर्तन की दर अपेक्षाकृत धीमी होती है।

संस्कृति के घटक (Components of Culture)

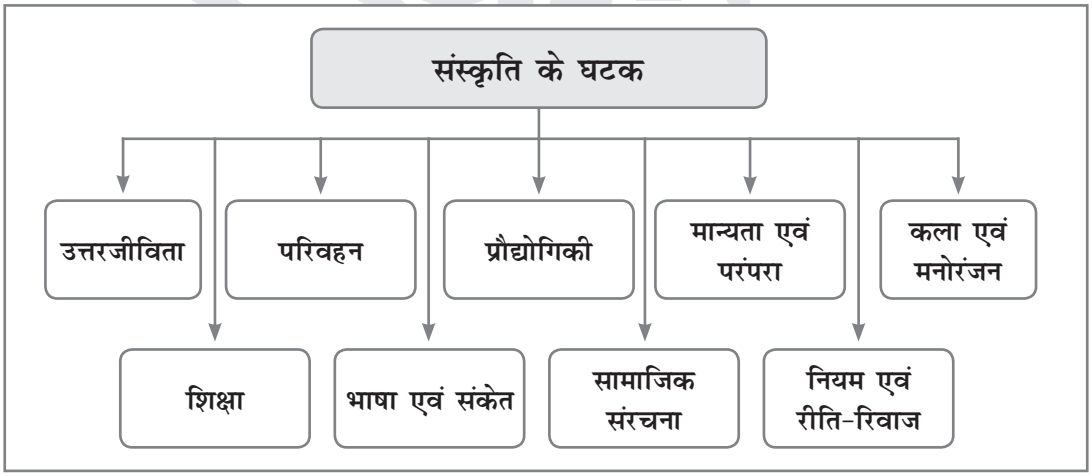

- भोजन, वस्त्र, सुरक्षा एवं आवास आधारित उत्तरजीविता (Survival) के तत्त्व।
- शिक्षा की विभिन्न पद्धतियाँ और प्रणालियाँ।
- एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने के लिये परिवहन के विभिन्न साधन।
- विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने हेतु भाषा एवं संकेत।

- अंकोरवाट मंदिर के अतिरिक्त कंबोडिया के यशोधरपुर में एक अन्य भव्य मंदिर बाफुओन है, जिसकी दीवारों पर महाकाव्यों के चित्र अंकित हैं।
- भारत की कला एवं संस्कृति से संपर्क के पश्चात् हिंद-चीन के क्षेत्र में स्थापत्य कला का जो विकास हुआ, उसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण ये मंदिर हैं।

मलेशिया (Malaysia)

लिगोर का संस्कृत शिलालेख

- प्राचीन काल में मलय प्रायद्वीप के नाम से प्रसिद्ध इस क्षेत्र को सुदूर-पूर्व में भारतीय संस्कृति के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता था। तक्कोल इस प्रायद्वीप का मुख्य व्यापारिक स्थल था, जहाँ से भारतीय व्यापारी सुदूर-पूर्व के विभिन्न स्थलों तक पहुँचते थे।
- मलय प्रायद्वीप से मंदिर और मूर्तियों के अवशेष प्राप्त होते हैं। चीनी स्रोतों से भी इस क्षेत्र में भारतीय राजवंशों की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है।
- रामायण, जातक कथाओं, मिलिंदपन्हो, रघुवंशम् और शिलप्पादिकारम् जैसे साहित्यों से मलय प्रायद्वीप का विवरण मिलता है।
- मलेशिया में मिले संस्कृत शिलालेख भारत से घनिष्ठ संबंधों की पुष्टि करते हैं। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण 'लिगोर' का शिलालेख है।

थाईलैंड (Thailand)

थाईलैंड का खमेर मंदिर

- थाईलैंड का प्राचीन नाम स्याम था। यहाँ भारतीय संस्कृति का प्रवेश ईसा की पहली सदी में हुआ।
- यहाँ के राज्यों एवं नगरों के नाम संस्कृत शब्दों से मिलते-जुलते हैं, जैसे– सुखोथई, द्वारावती, श्रीविजय, कांचनबुरी, राजबुरी इत्यादि।
- मलेशिया में ब्राह्मण एवं शैव धर्म से संबंधित मंदिर पाए गए हैं। यहाँ से अमरावती शैली एवं गुप्तकालीन कला के नमूने प्राप्त हुए हैं, जो कि भारत से सांस्कृतिक घनिष्ठता को सिद्ध करते हैं।

इंडोनेशिया (Indonesia)

प्रंबनन मंदिर

- इंडोनेशिया के साथ भारतीय संस्कृति का संपर्क पहली सदी में हुआ, परंतु प्रभावी संपर्क गुप्त काल में स्थापित हुआ।
- यहाँ चौथी सदी में 'पेलबंग' नामक हिंदू राज्य की स्थापना हुई, जो आगे चलकर 'श्रीविजय' के नाम से जाना गया। इत्सिंग के अनुसार, श्रीविजय के 'शैलेंद्र' वंश के शासक भारतीय मूल के थे। बोरोबुदुर स्तूप-जावा का निर्माण शैलेंद्र वंश के शासक द्वारा करवाया गया।
- इंडोनेशिया के जावा द्वीप में स्थित 'प्रंबनन' मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जो कि यहाँ का सबसे प्रमुख हिंदू स्मारक है। इस मंदिर के दोनों ओर ब्रह्मा और विष्णु के मंदिर हैं।

इकाई

2

भारतीय विरासत का संरक्षण
(Conservation of Indian Heritage)

- परिचय
- विरासत के संरक्षण की आवश्यकता
- कानूनी या वैधानिक प्रावधान
- संवैधानिक प्रावधान
- सांस्कृतिक संस्थाएँ
- अन्य प्रयास
  - ➤ इसरो नक्शा और प्रबंधन योजना
  - ➤ भारतीय विरासत संस्थान
- विरासतों के संरक्षण हेतु किये गए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास
  - ➤ अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ– आई.यू.सी.एन.
  - ➤ यूनेस्को
  - ➤ यूनेस्को द्वारा विश्व विरासतों का वर्गीकरण

परिचय (Introduction)

- देश के भीतर हमारे चारों ओर विद्यमान वे सभी वस्तुएँ जो हमें हमारे पूर्वजों से प्राप्त हुई हैं, विरासत कहलाती हैं।
- विरासत, किसी देश और उसके लोगों को एक अलग पहचान प्रदान करती है। कोई भी महान समाज या देश अपनी समृद्ध विरासत के आधार पर गौरव प्राप्त करता है।
- विरासत को सांस्कृतिक और प्राकृतिक दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत रीति-रिवाज, धर्म, संस्कृति, भाषा, संगीत, नृत्य, भवन, अभिलेख, सिक्के, रहन-सहन, खान-पान आदि को शामिल किया जाता है, जबकि प्राकृतिक विरासत में पर्वत, भूमि, नदी, समुद्र, खनिज, वन्यजीव आदि सम्मिलित होते हैं।
- किसी भी देश के लिये उसकी विरासत अमूल्य होती है, इसीलिये अपनी इस अमूल्य विरासत के महत्त्व को समझते हुए इसे संरक्षित रखना आवश्यक होता है।

विरासत के संरक्षण की आवश्यकता (Need of Heritage Protection)

- भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक परिदृश्य वाला, व्यापक भू-क्षेत्र और समृद्ध ऐतिहासिक विरासत वाला देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों को वास्तुकला और विरासत स्थलों में देखा जा सकता है।
- वैश्वीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण होने वाले तीव्र परिवर्तनों और लोगों में इसके महत्त्व के प्रति जागरूकता के अभाव के कारण इसे सुरक्षित रख पाना वर्तमान में एक चुनौती है।
- इन विरासत स्थलों को शहरीकरण का जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है।
- सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारी विरासत हमारी राष्ट्रीय पहचान है। इस कारण से इसका संरक्षण करना अति महत्त्वपूर्ण है। ऐसी कई एजेंसियाँ हैं, जो इसके संरक्षण का कार्य करती हैं, किंतु इस कार्य को करने के लिये हम सभी की सहभागिता भी ज़रूरी है।

- आई.यू.सी.एन. सचिवालय, सदस्य संगठनों और आई.यू.सी.एन. आयोगों के साथ काम करता है। इसका प्रधान सचिवालय ग्लैंड, स्विटज़रलैंड में स्थित है। एक निदेशक की अध्यक्षता में इसके आठ क्षेत्रीय कार्यालय अपने संबंधित क्षेत्रों में आई.यू.सी.एन. के कार्यक्रम को लागू करते हैं। वर्ष 1980 के बाद से इसके द्वारा 50 से अधिक देशों में कार्यालय स्थापित किये गए हैं।

यूनेस्को (UNESCO)

यूनेस्को– संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन
(**UNESCO** — United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization)

- गठन– 16 नवंबर, 1945 को
- मुख्यालय– पेरिस (फ्राँस)
- भारत सदस्य बना– वर्ष 1946 में
- सदस्य– 193
- सहयोगी सदस्य– 11
- संयुक्त राष्ट्र संघ की 17 विशिष्ट एजेंसियों में से एक

- 'यूनेस्को' संयुक्त राष्ट्र संघ का एक घटक है। इसका प्रमुख कार्य शिक्षा, प्रकृति, समाज विज्ञान, संस्कृति तथा संचार के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं समझ के स्तर को बढ़ावा देना है।
- इसका आदर्श वाक्य है "चूँकि युद्ध लोगों के मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं, इसलिये मनुष्य के मस्तिष्क में ही शांति की रक्षा का सृजन होना चाहिए।"
- इसकी स्थापना वर्ष 1945 में हुई, फ्राँस के पेरिस में स्थित इसके मुख्यालय का उद्घाटन 3 नवंबर, 1958 को किया गया।
- वर्तमान में यूनेस्को के 193 सदस्य और 11 सहयोगी सदस्य देश तथा दो पर्यवेक्षक सदस्य देश हैं। इसके वर्तमान महानिदेशक 'ऑद्रे अजोले' हैं।
- इसकी सदस्यता संविधान के अनुच्छेद– II और XV एवं सामान्य सम्मेलन की प्रक्रिया नियमों के नियम– 98 से 101 द्वारा शासित होती है।
- संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता के साथ यूनेस्को की सदस्यता का अधिकार है। जो राज्य संयुक्त राष्ट्र के सदस्य नहीं हैं, उन्हें सामान्य सम्मेलन के दो-तिहाई बहुमत से कार्यकारी बोर्ड की सिफारिश पर यूनेस्को में शामिल किया जा सकता है।
- भारत वर्ष 1946 से यूनेस्को का सदस्य है। भारत सरकार ने वर्ष 1949 में 'यूनेस्को के साथ सहयोग के लिये भारतीय राष्ट्रीय आयोग' (INCCU) का गठन किया, जिसे वर्ष 1951 में स्थायी स्वरूप दिया गया।
- इस आयोग में शिक्षा, प्राकृतिक विज्ञान, समाज विज्ञान, संस्कृति एवं संचार से संबंधित पाँच उप-आयोग हैं। वर्तमान में भारत में 32 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 1 मिश्रित स्थल सहित कुल 40 विश्व धरोहर स्थल हैं।

इकाई

3

भारतीय स्थापत्य कला
(Indian Architecture)

- परिचय

प्राचीन भारत की स्थापत्य कला

- हड़प्पाई स्थापत्य कला
  - हड़प्पाकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएँ
  - हड़प्पाई नगरीकरण की विरासत
  - हड़प्पा सभ्यता के कुछ महत्त्वपूर्ण स्थल और उनकी पुरातात्त्विक प्राप्तियाँ
- स्तूप स्थापत्य कला
  - स्तूप के प्रकार
  - स्तूप स्थापत्य कला का ऐतिहासिक विकास
  - प्रसिद्ध स्तूप
- चैत्य स्थापत्य कला
  - प्रसिद्ध चैत्य
- गुहा स्थापत्य कला
  - मौर्यकालीन गुहा स्थापत्य कला
  - गुप्त एवं गुप्तोत्तरकालीन गुहा स्थापत्य कला
- मंदिर स्थापत्य कला
  - मंदिर विकास के चरण
  - हिंदू मंदिर के आवश्यक घटक
  - मंदिर स्थापत्य शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन
  - नागर स्थापत्य कला
  - नागर स्थापत्य कला की उपशैलियाँ
  - द्रविड़ स्थापत्य कला
  - द्रविड़ स्थापत्य कला की उपशैलियाँ
  - वेसर स्थापत्य कला

मध्यकालीन भारत की स्थापत्य कला

- इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएँ
- दिल्ली सल्तनतकालीन स्थापत्य कला
  - मामलुक स्थापत्य कला
  - खिलजी स्थापत्य कला
  - तुगलक स्थापत्य कला
  - सैयद और लोदीकालीन स्थापत्य कला
  - प्रांतीय स्थापत्य कला
- मुगलकालीन स्थापत्य कला
  - बाबर एवं हुमायूँकालीन स्थापत्य कला
  - अकबरकालीन स्थापत्य कला
  - जहाँगीरकालीन स्थापत्य कला
  - शाहजहाँकालीन स्थापत्य कला
  - औरंगज़ेबकालीन स्थापत्य कला
  - प्रांतीय स्थापत्य कला

आधुनिक भारत की स्थापत्य कला

- आधुनिक स्थापत्य कला पर प्रभाव
  - पुर्तगाली प्रभाव
  - फ्राँसीसी प्रभाव
  - ब्रिटिश प्रभाव
- आधुनिक स्थापत्य कला की शैलियाँ
  - इंडो-गोथिक शैली
  - नव-रोमन शैली

स्तंभ स्थापत्य कला

- अशोककालीन स्तंभों और अक्खमनी स्तंभों का तुलनात्मक अध्ययन
- महत्त्वपूर्ण मौर्यकालीन स्तंभ

परिचय (Introduction)

- स्थापत्य कला से आशय किसी स्थान को मानव के रहने योग्य बनाने की कला से है। अंग्रेज़ी में इसे आर्किटेक्चर कहते हैं। यह लैटिन शब्द टैक्टन से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ निर्माता होता है। भवनों के आकल्पन (डिज़ाइन), विन्यास एवं रचना की प्रक्रिया तथा उत्पाद स्थापत्य कला के अंतर्गत आते हैं। भवन निर्माण से संबंधित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भी वास्तुकला/स्थापत्य कला के अंतर्गत आती है।

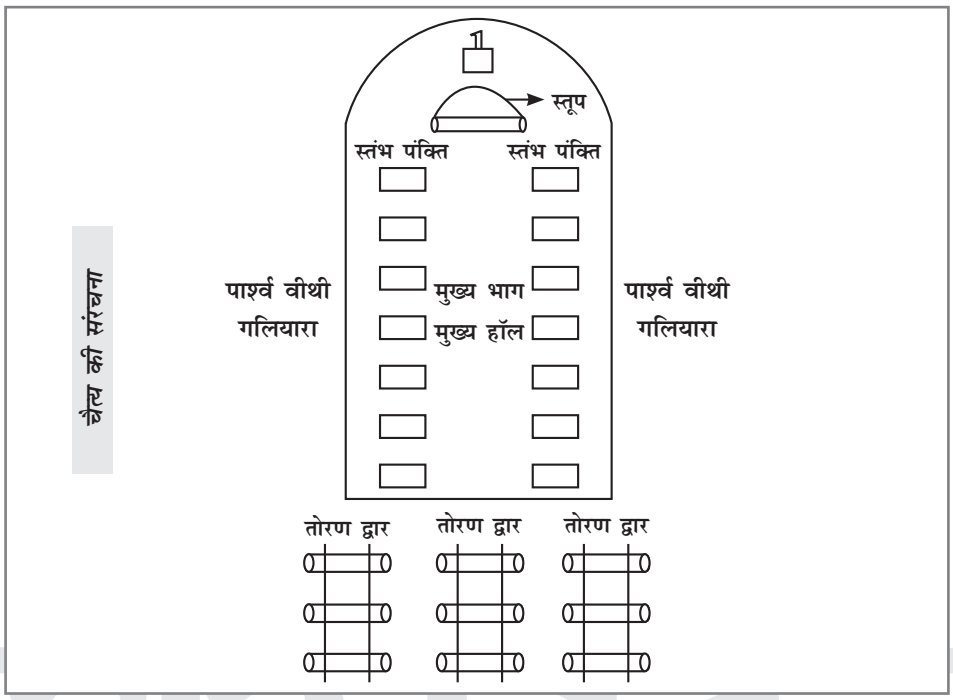

प्रसिद्ध चैत्य (Famous Chaitya)

भाजा चैत्य

- यह महाराष्ट्र के लोनावला के निकट पुणे ज़िले में स्थित है।
- यह 22 शैलकृत गुफाओं का एक समूह है, जो हीनयान मत से संबद्ध है।

भाजा चैत्य

कार्ले चैत्य

- कार्ले की गुफा भी महाराष्ट्र के पुणे ज़िले में स्थित है।
- यह चैत्य-गृह दोनों तरफ सीधी रेखा में बने स्तंभों के लिये प्रसिद्ध है।
- इसमें तीन विहार भी हैं। कला की दृष्टि से विहार साधारण हैं, परंतु चैत्य विशिष्ट है। इसे महाचैत्य भी कहा गया है।
- स्तंभों पर बुद्ध की मूर्तियाँ भी हैं और ब्राह्मी लिपि में लेख भी खुदे हैं।
- एक अभिलेख के अनुसार, कार्ले चैत्य का निर्माण नहपान के दामाद पुषावदत्त ने करवाया था, जिसे अजमित्र नामक व्यक्ति ने पूर्ण करवाया।

कार्ले चैत्य

अजंता चैत्य

- यह चैत्य महाराष्ट्र के औरंगाबाद ज़िले में स्थित है।
- अजंता की गुफा संख्या 7, 11 और 15 में चैत्य का निर्माण हुआ है।
- अजंता की गुफाएँ किसी एक काल से संबंधित न होकर उत्तरोत्तर विकास के प्रतीक हैं। इनका संबंध मौर्योत्तर काल, गुप्त काल और गुप्तोत्तर काल से है।

मंदिर विकास के चरण (Temple Development Stages)

प्रथम चरण

साँची स्थित मंदिर

- वर्गाकार आकृति के इन मंदिरों की छत सपाट होती थी।
- द्वारमंडप (Portico) उथले स्तंभों के ऊपर निर्मित होते थे।
- समस्त संरचना एक कम ऊँचाई के मंच (जगती) के ऊपर निर्मित होती थी।
- गुप्त काल के दौरान पाँचवीं सदी ईस्वी में निर्मित साँची का मंदिर इस चरण का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

द्वितीय चरण

नचना कुठार का पार्वती मंदिर

- इस चरण में अधिकतर विशेषताएँ प्रथम चरण के ही सदृश थीं।
- मंच की ऊँचाई अपेक्षाकृत अधिक होती थी अर्थात् मंच को उभार प्रदान किया जाता था।
- इस चरण में गर्भगृह के चारों ओर ढके हुए मार्ग बनाए जाने लगे, जिन्हें प्रदक्षिणा पथ कहा जाता था।
- इस चरण के दौरान कहीं-कहीं दो मंज़िला मंदिरों के उदाहरण भी मिलते हैं।
- द्वितीय चरण का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण नचना कुठार का पार्वती मंदिर है, जो मध्य प्रदेश के भुमरा से लगभग 16 किमी. की दूरी पर अवस्थित है। यह मंदिर गुप्तकालीन वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है।

तृतीय चरण

देवगढ़ का दशावतार मंदिर

- इस चरण के अंतर्गत सपाट छत के स्थान पर शिखरयुक्त मंदिरों का निर्माण किया जाने लगा।
- इन मंदिरों की ऊँचाई अब भी बहुत कम थी तथा इनका आकार वर्गाकार होता था।
- इस चरण के दौरान मंदिर निर्माण की पंचायतन शैली का उद्भव हुआ।
- उत्तर प्रदेश के ललितपुर में अवस्थित देवगढ़ का दशावतार मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण गुप्त काल में पाँचवीं सदी में हुआ था।

पंचायतन शैली

इस शैली में मुख्य देवता के मंदिर के साथ चार गौण देवताओं के भी मंदिर होते थे। मुख्य मंदिर वर्गाकार होता था तथा इसके सामने एक लंबा मंडप होता था जो इसे आयताकार स्वरूप प्रदान करता था। गौण देवताओं के मंदिर को मंडप के चारों कोणों पर एक-दूसरे के सम्मुख स्थापित किया जाता था। इस प्रकार, मंदिर का भू-विन्यास क्रूस के आकार (Crucified Shape) का हो जाता था।

लक्ष्मण मंदिर

नायक उपशैली

- विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद सोलहवीं-अठारहवीं सदी के दौरान नायकों के शासन के अंतर्गत इस शैली का विकास हुआ। इसे मदुरै शैली के नाम से भी जाना जाता है।
- इस शैली के अंतर्गत बरामदे के साथ-साथ गर्भगृह के चारों तरफ बड़े गलियारे का निर्माण किया गया, जिसे 'प्राक्रम' कहा गया।
- नायक शैली के मंदिरों में प्रदक्षिणा पथ को छतदार बनाया गया।
- नायक शासकों द्वारा बनाए गए गोपुरम आकार में काफी वृहद् थे। मदुरै के मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर का गोपुरम विश्व का सबसे ऊँचा गोपुरम है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वर का मंदिर

- मदुरै शहर स्थित मीनाक्षी सुंदरेश्वर का मंदिर भगवान शिव की पत्नी देवी मीनाक्षी को समर्पित है।
- इस मंदिर के शिल्पकारी वाले स्तंभ विशिष्ट भित्ति चित्रों से ढके हुए हैं जो राजकुमारी मीनाक्षी और भगवान शिव के साथ उनके विवाह के समय के दृश्यों को प्रदर्शित करते हैं।

मीनाक्षी सुंदरेश्वर का मंदिर

वेसर स्थापत्य कला (Vesara Architecture)

- इस शैली का उद्भव सातवीं सदी में चालुक्य वंश के शासकों के प्रश्रय में हुआ। इसलिये इस शैली को चालुक्य शैली भी कहा जाता है।
- इस शैली के मंदिर विंध्याचल पर्वत से लेकर कृष्णा नदी के तट तक हैं, जिनमें नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों की विशेषताएँ शामिल हैं।
- इस शैली के अंतर्गत मंदिर के दो मुख्य भाग– विमान और मंडप, अंतराल द्वारा एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।
- इन मंदिरों में प्रदक्षिणा पथ छत से ढके हुए नहीं होते हैं।
- वक्ररेखीय शिखर और वर्गाकार आधार की विशेषताएँ नागर शैली से ली गई हैं, जबकि जटिल नक्काशियों, मूर्तियों तथा विमान के डिज़ाइन पर द्रविड़ शैली का प्रभाव परिलक्षित होता है।
- मंदिर की दीवारों के साथ-साथ स्तंभ और छतों पर भी कलाकृतियाँ उकेरी गई हैं।
- इस शैली के अंतर्गत बादामी और कल्याणी के चालुक्यों द्वारा मंदिरों का निर्माण किया गया, जैसे- हंपी में विरुपाक्ष मंदिर।
- राष्ट्रकूट शासकों द्वारा एलोरा में कैलाशनाथ मंदिर और लाढ खान मंदिर तथा होयसल शासकों द्वारा मैसूर के हेलेबिड में होयसलेश्वर मंदिर इस शैली में बने कुछ अन्य प्रमुख उदाहरण हैं।

लाढ खान मंदिर

होयसल उपशैली

- कर्नाटक प्रदेश में होयसल शासकों द्वारा मंदिर स्थापत्य की वेसर शैली के अंतर्गत इस उपशैली को विकसित किया गया। इस शैली के प्रमुख मंदिरों को बेलूर, हेलेबिड तथा श्रृंगेरी में निर्मित किया गया।
- इस शैली में बने मंदिरों में स्तंभों वाले केंद्रीय हॉल के चारों ओर अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ है। इसे 'तारामय योजना' (Stellate Plan) के रूप में भी जाना जाता है।

- इस शैली में उथले कार्निस एवं प्याज के आकार के गुंबद का प्रयोग किया गया है। भवनों के गुंबद लंबे और धारीदार थे। गुंबदों पर अलंकरण के लिये सामान्यत: ताँबा और पीतल की परत चढ़ाई गई थी।
- मेहराबों के अलंकरण के लिये अनेक पत्रकों का उपयोग किया गया था।

आधुनिक भारत की स्थापत्य कला (Architecture of Modern India)

- मुगल साम्राज्य के कमज़ोर होने और यूरोपीय साम्राज्यवादी देशों के भारत में शक्तिशाली होने के परिणामस्वरूप एक तरफ भारत से मुगल सत्ता का अंत हुआ तो दूसरी तरफ यूरोपीय वास्तुकला पर आधारित भवन निर्माण कला की शुरुआत हुई।
- यूरोपीय कंपनियों के भारत आने के साथ ही भारत की वास्तुकला पर पुर्तगाली, फ्राँसीसी और ब्रिटिश कला का प्रभाव देखा जाने लगा।

आधुनिक स्थापत्य कला पर प्रभाव (Impact on Modern Architecture)

पुर्तगाली प्रभाव (Portuguese Impact)

- पुर्तगाली भारत में वास्तुकला की आइबेरियन शैली लेकर आए। आरंभ में पुर्तगालियों ने व्यापारिक ठिकानों और गोदामों का निर्माण करवाया। आगे चलकर दुर्गीकृत नगरों की स्थापना की गई। आइबेरियन शैली में 'आँगन गृहों' तथा 'बैरोक चर्चों' का प्रचलन शुरू हुआ।
- पुर्तगालियों द्वारा निर्मित महत्त्वपूर्ण इमारतों में गोवा का 'सेंट केथेड्रल चर्च', बोम जीसस का बसिलिका चर्च (गोवा), सेंट पॉल का चर्च (दीव), दीव का किला इत्यादि सम्मिलित हैं।

सेंट केथेड्रल चर्च

बैरोक शैली

यह सत्रहवीं सदी में यूरोप में विकसित होने वाली स्थापत्य, संगीत, नृत्य, चित्रकारी, साहित्य तथा मूर्तिकला की एक शैली है। इस शैली में परस्पर विपरीत और गहरे रंगों, संचलन और भव्यता का प्रयोग किया गया है। इसे अलंकृत, सुविस्तीर्ण और नाटकीय प्रभाव दर्शाने के लिये अभिकल्पित किया गया था।

फ्राँसीसी प्रभाव (French Impact)

- फ्रेंच भारत में शहरी योजना (Urban planning) की अवधारणा लेकर आए। इनके द्वारा बसाए गए शहरों पांडिचेरी (पुडुचेरी) और चंदननगर (चंद्रनगर) का निर्माण कार्टेसियन ग्रिड योजना और वैज्ञानिक वास्तुकला के उपयोग द्वारा किया गया।

सेक्रेड हार्ट चर्च

- इन स्तंभों की औसत ऊँचाई 40 फीट है, जो कि चुनार के बलुआ पत्थर से निर्मित है। इन स्तंभों पर एक खास तरह की पॉलिश की गई है, जिसे 'ओप' कहते हैं। अशोक के स्तंभ चार खंडों से मिलकर बने हैं, जो इस प्रकार हैं–
  - ➤ यष्टि (Shaft) खंभे का बेलनाकार हिस्सा है जो कि सपाट और अत्यधिक चिकना है। इसकी अनुप्रस्थ काट गोलाकार है तथा यह ऊपर की ओर थोड़ा पतला (Tapered) होता है। यह एकाश्मक प्रस्तर से निर्मित होता है।
  - ➤ यष्टि के ऊपर घंटे अथवा आवांगमुखी कमल (Inverted Lotus) जैसी संरचना लाट (Capital) कहलाती है।
  - ➤ लाट के ऊपर रखा वृत्ताकार अथवा आयताकार आधार चौकी (Abacus) कहलाता है, जिसके ऊपर अलंकृत रूपांकन एवं पशु आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
  - ➤ स्तंभ के शीर्ष पर किसी पशु की मूर्ति को स्थान दिया गया है, जैसे– सारनाथ स्तंभ में सिंह तथा रामपुरवा स्तंभ में बैल की आकृति।

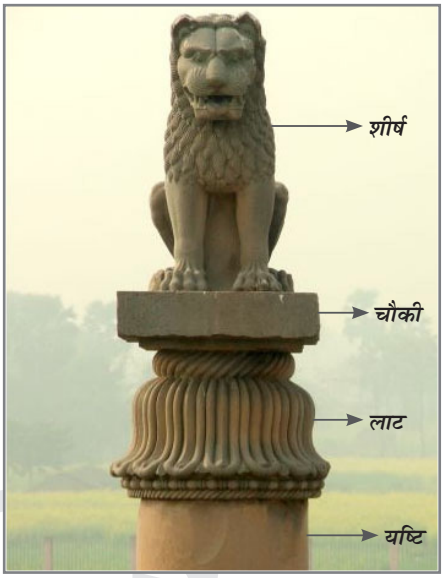

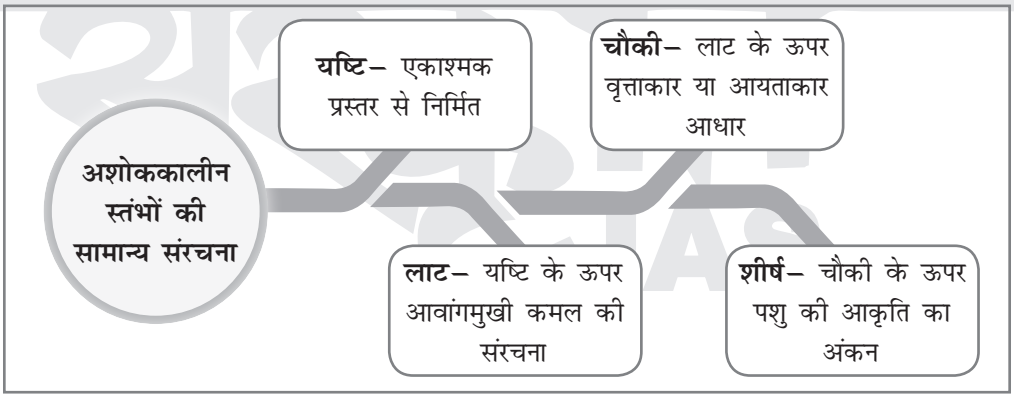

राष्ट्रीय प्रतीक (National Symbol)

- भारत का राजचिह्न अशोक के सारनाथ स्तंभ के शीर्ष पर स्थित सिंह की प्रतिकृति है। इस स्तंभ के शीर्ष पर चार सिंह एक-दूसरे की ओर पीठ किये हुए बैठे हैं, परंतु सामने से केवल तीन ही सिंह दिखाई देते हैं।
- इसके नीचे स्थित चौकी पर उभरी हुई नक्काशी है, जिसमें 32 तीलियों का एक चक्र है, जो बुद्ध द्वारा धर्मचक्र प्रवर्तन का प्रतीक है। साथ ही, इस चौकी पर चार पशु दर्शाए गए हैं– एक दौड़ता हुआ घोड़ा, एक बैल, एक हाथी और एक सिंह। फलक के नीचे मुंडकोपनिषद् का सूत्र वाक्य 'सत्यमेव जयते' देवनागरी लिपि में अंकित है।

इकाई

4

मूर्तिकला
(Sculpture Art)

- परिचय
- सिंधुकालीन मूर्तिकला
  - ➤ मृण्मूर्तियाँ
  - ➤ धातु मूर्तियाँ
  - ➤ प्रस्तर मूर्तियाँ
  - ➤ मृद्भाँड
  - ➤ मुहरें
  - ➤ आभूषण
- मौर्यकालीन मूर्तिकला
- मौर्योत्तरकालीन मूर्तिकला
  - ➤ शुंगकालीन मूर्तिकला
  - ➤ सातवाहनकालीन मूर्तिकला
  - ➤ कुषाणकालीन मूर्तिकला
    - ■ गांधार मूर्तिकला
    - ■ मथुरा मूर्तिकला
- गुप्तकालीन मूर्तिकला
- गुप्तोत्तरकालीन मूर्तिकला
  - ➤ चालुक्य शैली
  - ➤ राष्ट्रकूट शैली
  - ➤ पाल शैली
  - ➤ पल्लव शैली
  - ➤ चोल शैली
  - ➤ होयसल शैली
  - ➤ ओडिशा शैली
  - ➤ खजुराहो शैली
  - ➤ विजयनगर शैली
  - ➤ नायक शैली
  - ➤ राजपूत शैली
  - ➤ दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय मूर्तिकला
- बुद्ध से संबंधित विभिन्न मुद्राएँ
- विभिन्न अवस्थाओं में मूर्तियाँ

परिचय (Introduction)

- भारत में मूर्तियों का निर्माण सिंधु घाटी सभ्यता से ही शुरू हो गया था, जो आधुनिक मूर्तिकला के विकास तक अनवरत जारी है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को जानने और समझने के संदर्भ में मूर्तिकला महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्रोत है।
- प्राचीन भारत की मूर्तिकला से जनसाधारण के जीवन का सजीव चित्रण होता है। इन प्राचीन मूर्तियों से तत्कालीन धार्मिक जीवन से लेकर सामाजिक जीवन के बारे में पता चलता है।
- मूर्तिकला, कला की लघु रचना होती है, जो कि अपने स्वरूप में त्रिआयामी होती है। यह हस्तनिर्मित होने के साथ-साथ उपकरणों की सहायता से भी बनाई जाती है।
- मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र के समावेशन हेतु रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को समाविष्ट किया जाता है।
- किसी भी मूर्ति को बनाने में सामान्यत: एक ही प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया जाता है, जैसे– काँस्य मूर्ति, मृण्मूर्ति, प्रस्तर मूर्ति आदि।

ने मुकुट को धारण कर रखा है। आकृति की दाईं ओर हाथी और बाघ है, जबकि बाई ओर गैंडा और भैंस का चित्रण है। आकृति के आसन के नीचे दो हिरन को भी दर्शाया गया है।

आभूषण (Ornament)

- हड़प्पा सभ्यता में मूल्यवान धातुओं और रत्नों के आभूषणों का निर्माण किया गया। साथ ही हड्डियों, हाथीदाँत एवं मिट्टी जैसी सामग्रियों से भी गहने बनाए गए थे।
- पुरुष और महिलाएँ दोनों ही आभूषणों को धारण करते थे। कंठाहार, बाजूबंद, चूड़ियाँ, करधनी, झुमके, अंगूठियाँ जैसे आभूषणों के प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- मनके निर्माण का कार्य भी इस सभ्यता की मुख्य विशेषता है। कोर्नेलियन, नीलम, क्वार्टज़, स्टेटाइट आदि से मनकों का निर्माण किया जाता था। चन्हूदड़ो और लोथल से मनके निर्माण के कारखानों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

हड़प्पाकालीन आभूषण

मौर्यकालीन मूर्तिकला (Sculpture Mauryan)

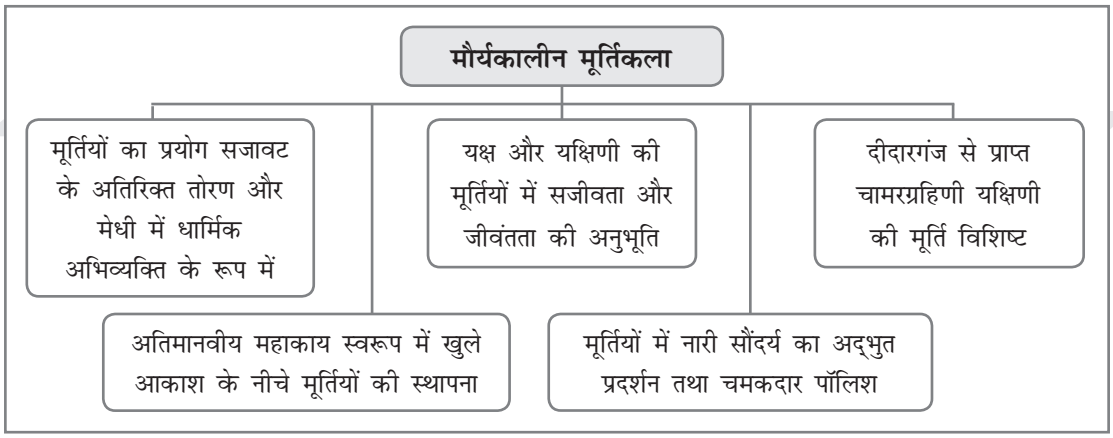

- मौर्यकालीन मूर्तिकला की दो प्रसिद्ध मूर्तियाँ यक्ष और यक्षिणी की हैं, जो तीनों धर्मों– जैन, बौद्ध और हिंदू धर्म में पूजनीय मानी जाती थीं। इस काल की मूर्तियों का उपयोग सजावट के अतिरिक्त तोरण और मेधी में धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था।
- इन मूर्तियों को स्थापित करने की अपनी निजी शैली होती थी, जो कि अतिमानवीय महाकाय स्वरूप में खुले आकाश के नीचे स्थापित की जाती थीं। इन मूर्तियों की मांसपेशियों की दृढ़ता देखने से इसके जीवंत एवं सजीवत होने का आभास होता है।
- ये मूर्तियाँ मथुरा, शिशुपालगढ़, पाटलिपुत्र, विदिशा, कलिंग और पश्चिम सुपार्रक के क्षेत्रों में पाई गई हैं। परखम ग्राम, बेसनगर एवं पाटलिपुत्र से प्राप्त यक्ष की मूर्ति ओपदार चमक से युक्त हैं। परखम ग्राम से प्राप्त यक्ष की मूर्ति को मणिभद्र भी कहा गया है।

दीदारगंज से प्राप्त चामरग्रहिणी यक्षिणी की मूर्ति

ओडिशा शैली (Odisha Style)

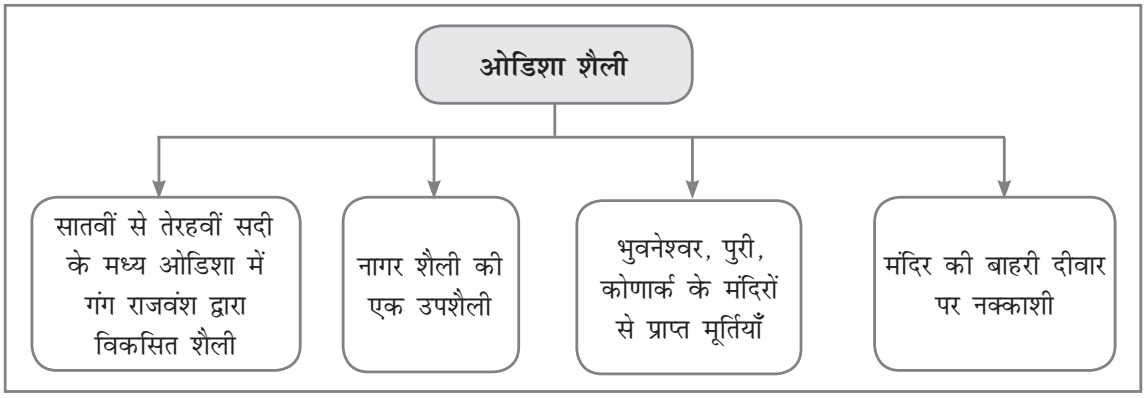

- सातवीं से तेरहवीं सदी के मध्य ओडिशा में गंग राजवंश ने भुवनेश्वर, पुरी, कोणार्क आदि स्थानों पर विशाल एवं भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया। ये मंदिर मूर्तियों से समृद्ध रूप से सुसज्जित हैं।
- ओडिशा शैली, नागर शैली की एक प्रमुख उपशैली है, जिसके अंतर्गत निर्मित मंदिरों में कोणार्क का सूर्य मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर आदि प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों की बाहरी दीवारों पर व्यापक मात्रा में बारीक आकृतियाँ उकेरी गई हैं लेकिन भीतरी दीवारों पर कोई नक्काशी नहीं है।
- लिंगराज मंदिर से मनोहारी मुस्कान, राजसी आभूषणों एवं केश-सज्जा से युक्त कई प्रतिमाएँ मिलती हैं, जिन्हें नायिका कहते हैं। वृक्षों की शाखाओं को पकड़ी हुई ये नारी मूर्तियाँ अधिकांशतः नृत्य की विभिन्न मुद्राओं में खड़ी हैं। गुलाबी बलुआ पत्थर से निर्मित मंदिर की दीवारों पर क्लोराइट शीस्ट पत्थर से बनी मूर्तियों को सज्जित किया गया है।

नायिका, लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर

सूर्य को खींचता हुआ रथ, सूर्य मंदिर, कोणार्क

मंजीरा वादक, सूर्य मंदिर, कोणार्क

बुद्ध से संबंधित विभिन्न मुद्राएँ (Different Postures Related to Buddha)

भूमिस्पर्श मुद्रा

ध्यान मुद्रा

वितर्क मुद्रा

अभयमुद्रा

धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा

अंजलि मुद्रा

उत्तरबोधि मुद्रा

वरद मुद्रा

करण मुद्रा

वज्र मुद्रा

- **भूमिस्पर्श मुद्रा :** इस मुद्रा में बुद्ध को उनके बाएँ हाथ के साथ ध्यान की मुद्रा में बैठे दिखाया गया है, जिसमें हथेली ऊपर की ओर है तथा दाहिना हाथ भूमि को स्पर्श कर रहा है। यह मुद्रा बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के क्षण का प्रतिनिधित्व करती है।

इकाई

5

भारतीय चित्रकला
(Indian Painting)

- भूमिका
- भारतीय चित्रकला की विशेषताएँ
- भारतीय चित्रकला का सिद्धांत
- प्रागैतिहासिक चित्रकला
- हड़प्पाकालीन चित्रकला
- प्राचीनकालीन भित्ति चित्रकला
  - ➤ भित्ति चित्रकला की तकनीक
  - ➤ अजंता चित्रकला
  - ➤ बाघ चित्रकला
  - ➤ बादामी चित्रकला
  - ➤ सित्तनवासल चित्रकला
  - ➤ एलोरा चित्रकला
  - ➤ आर्मामलई चित्रकला
  - ➤ रावण छाया आश्रय चित्रकला
  - ➤ तंजौर चित्रकला
  - ➤ लेपाक्षी चित्रकला
  - ➤ जोगीमारा चित्रकला
- लघु चित्रकला
  - ➤ पाल लघु चित्रकला
  - ➤ पश्चिम भारतीय लघु चित्रकला
  - ➤ सल्तनतकालीन लघु चित्रकला
  - ➤ मुगलकालीन लघु चित्रकला
  - ➤ दक्कन लघु चित्रकला
- मध्य भारत और राजस्थानी चित्रकला
  - ➤ मालवा चित्रकला
  - ➤ मेवाड़ चित्रकला
  - ➤ बूंदी चित्रकला
  - ➤ कोटा चित्रकला
  - ➤ किशनगढ़ चित्रकला
  - ➤ बीकानेर चित्रकला
  - ➤ मारवाड़ चित्रकला
  - ➤ आमेर-जयपुर या ढूंढाड़ चित्रकला
  - ➤ मुगल एवं राजपूत चित्रकला में अंतर
- पहाड़ी चित्रकला
  - ➤ बसौली चित्रकला
  - ➤ गुलेर चित्रकला
  - ➤ काँगड़ा चित्रकला
  - ➤ कुल्लू-मंडी चित्रकला
- आधुनिक चित्रकला
  - ➤ कंपनी चित्रकला
  - ➤ बाज़ार चित्रकला
  - ➤ बंगाल चित्रकला
- लोक चित्रकला
  - ➤ कालीघाट चित्रकला
  - ➤ ओडिशा के पट्टचित्र
  - ➤ नाथद्वारा के पट्टचित्र
  - ➤ मधुबनी चित्रकला
  - ➤ वरली चित्रकला
  - ➤ कालमेजुथु चित्रकला
  - ➤ कोहवर और सोहरई चित्रकला
  - ➤ फड़ चित्रकला
  - ➤ गोंड चित्रकला
  - ➤ कलमकारी चित्रकला

भूमिका (Preface)

- चित्रकला, कला के सर्वाधिक कोमल रूपों में से एक है जो रेखा और वर्ण के माध्यम से विचारों तथा भावों को अभिव्यक्ति देती है। प्रागैतिहासिक काल में जब मनुष्य मात्र गुफा में निवास करता था, तब उसने अपनी सौंदर्यपरक अतिसंवेदनशीलता और सृजनात्मक प्रेरणा को संतुष्ट करने के लिये शैलाश्रय चित्र बनाए।
- चित्रकला की परंपरा भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से चली आ रही है। गौरतलब है कि भारतीय चित्रकला की सौंदर्यात्मकता की निरंतरता आज तक विद्यमान है।
- आरंभिक भारतीय चित्रकला के साक्ष्य हमें गुफाओं की दीवारों पर मिलते हैं। आगामी समय में ये नगरीय सभ्यता के उदय के साथ ही दैनिक जीवन में प्रयोग में लाए जा रहे उपकरणों पर भी मिलने लगे। इन उपकरणों के अंतर्गत बर्तनों, मृद्भाँडों, वस्त्रों, भवनों, सिक्कों आदि पर की गई चित्रकारी विशिष्ट है।

- भित्ति चित्र बनाने की एक अन्य विधि– टेंपेरा विधि में सूखे प्लास्टर पर चित्र को बनाया जाता था। इस विधि में चित्र बनाने से पूर्व दीवार को अच्छी तरह से साफ करके उसके ऊपर लेप चढ़ाया जाता था। यह लेप गोबर, सफेद मिट्टी, शिलाचूर्ण आदि को मिश्रित करके तैयार किया जाता था। चित्र बनाने के लिये लाल खड़िया का प्रयोग होता था। इसके अतिरिक्त, इसमें रंगों के साथ अंडे की सफेदी और चूने को मिलाया जाता था।
- इस भित्ति चित्रों में मुख्य रूप से गैरिक लाल, चटकीला लाल (सिंदूरी), गैरिक पीले, इंडिगो नीले, लाजवर्द, काले, चाक सफेद, और हरे रंगों का प्रयोग किया गया था।
- भित्ति चित्रों के लिये प्रयुक्त कूँची (Brush) को बकरी, ऊँट, नेवला आदि पशुओं के बालों से तैयार किया गया था।

अजंता चित्रकला (Ajanta Painting)

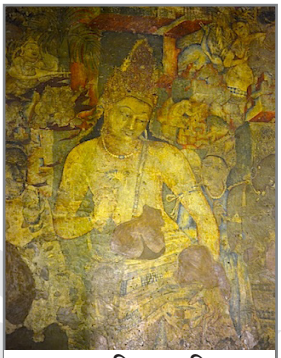

पद्मपाणि का चित्र

- अजंता की दुर्लभ चित्रकारी की जानकारी सबसे पहले जेम्स अलेग्जेंडर ने 1824 ई. में रॉयल एशियाटिक सोसायटी की पत्रिका के माध्यम से दी।
- अजंता की सभी 29 गुफाओं में चित्रकला की गई थी, जिनमें से केवल 6 गुफाओं (1-2, 9-10 तथा 16-17) के चित्र ही वर्तमान में सुरक्षित हैं।
- इन सभी गुफाओं की चित्रकला विभिन्न समयों में की गई थी। नवीं और दसवीं गुफाओं के चित्र पहली सदी से संबंधित हैं। सोलहवीं और सत्रहवीं गुफाओं के चित्रों का निर्माण गुप्त काल के दौरान हुआ था। इसके अतिरिक्त, पहली और दूसरी गुफाओं के चित्र सातवीं सदी के बने हैं।
- अजंता के गुहा चित्रों के तीन विषय– अलंकरण, चित्रण और वर्णन हैं। अलंकरण के अंतर्गत विभिन्न फूल-पत्तियों, वृक्षों और पशुओं के चित्रों को सम्मिलित किया जाता है। चित्रण में बुद्ध और बोधिसत्व का अंकन शामिल है। इन चित्रों में बुद्ध के भौतिक जीवन से संबंधित घटनाओं का आकर्षक एवं सुंदर ढंग से चित्रण मिलता है। इसके अतिरिक्त, जातक ग्रंथों से ली गई कथाओं को वर्णनात्मक ढंग से उकेरा गया है।
- अजंता की गुफाओं में फ्रेस्को और टेंपेरा दोनों ही विधियों से चित्र बनाए गए हैं। फ्रेस्को विधि के तहत गीले प्लास्टर पर चित्र को बनाया जाता था, जिनमें विशुद्ध रंगों के प्रयोग से चित्रकारी की जाती थी।
- टेंपेरा विधि के अंतर्गत सूखे प्लास्टर पर चित्र को बनाया जाता था। इस विधि में चित्र बनाने से पूर्व दीवार को अच्छी तरह से साफ करके उसके ऊपर लेप चढ़ाया जाता था। यह लेप गोबर, सफेद मिट्टी, शिलाचूर्ण आदि को मिश्रित करके तैयार किया जाता था। चित्र बनाने के लिये लाल खड़िया का प्रयोग होता था। इसके अतिरिक्त, इसमें रंगों के साथ अंडे की सफेदी और चूने को मिलाया जाता था।
- अजंता के गुहा चित्रों में लाल, नीला, पीला, काला और सफेद रंग प्रयोग में लाए जाते थे। विदित है कि अजंता से पूर्व कहीं भी नीले रंग का उपयोग नहीं हुआ था। इन गुफाओं से प्राप्त चित्रों की चमक अद्वितीय और अलौकिक है, ये चित्र रात के अँधेरे में भी चमकते हैं।
- अजंता के चित्रों की एक विशेषता इसके पात्रों का स्वाभाविक चित्रण है, जिसमें महिला आकृति का अद्वितीय केशविन्यास और पशु-पक्षियों के भावों की अभिव्यक्ति शामिल हैं।

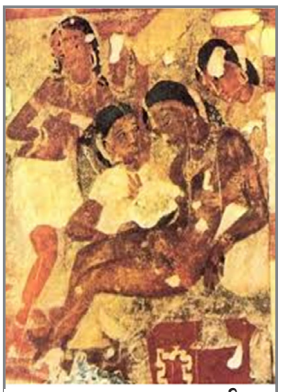

मरणासन्न राजकुमारी का चित्र

- क्षितिज, सुनहरा आकाश और भूदृश्यांकन की विशेषताओं में फारसी चित्रकला के प्रभाव को देखा जा सकता है।
- मैना पक्षी के साथ महिला, सूफी कवि की सचित्र पांडुलिपि आदि इस चित्रकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- इस चित्रकला में मालवा की चित्रकला और विजयनगर के भित्ति चित्रों की विशेषताओं को सम्मिलित किया गया है।

हैदराबाद चित्रकला (Hyderabad Painting)

सेविका के साथ महिला विलावल रागिणी

- 1724 ई. में चिन-कुलिच खान द्वारा हैदराबाद में स्वतंत्र राज्य की स्थापना के साथ ही यहाँ चित्रकला का विकास शुरू हुआ।
- हैदराबाद चित्रकला के विकास में मुगल चित्रकारों की मुख्य भूमिका है। औरंगज़ेब के शासनकाल में कई मुगलकालीन चित्रकार यहाँ आ बसे।
- इस चित्रकला की शैली अलंकारिक और सजावटी है। इसमें भड़कीले रंगों का प्रयोग किया गया है। मुखाकृति एवं परिधान में दक्षिण की सुस्पष्ट विशेषताओं को देखा जा सकता है।

तंजौर चित्रकला (Tanjore Painting)

लक्ष्मी का चित्र, तंजौर चित्रकला

- अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में तंजौर में एक चित्रकला का विकास हुआ, जिसमें सुदृढ़ आरेखन, विकसित छायाकरण की तकनीकों तथा चटकदार रंगों का प्रयोग किया गया।
- यह कला सोलहवीं सदी में चोल शासनकाल के दौरान उत्पन्न हुई थी। आगामी समय में इस शैली को मराठा शासकों का संरक्षण मिला।
- इस शैली की विषयवस्तु में हिंदू देवी-देवताओं और संतों के चित्रों के अतिरिक्त पक्षियों, जानवरों और फूलों के दृश्य शामिल हैं।
- इन चित्रों को ठोस लकड़ी के तख्तों पर बनाया गया है और मुख्य आकृतियाँ केंद्र में चित्रित हैं।
- चित्रों के अलंकरण एवं सजावट हेतु रत्नों एवं तराशे गए काँच का प्रयोग किया गया है।
- इस चित्रकला में अलंकरण हेतु सोने की पतली परत भी चिपकाई जाती है, जबकि शेष भागों को चमकीले रंगों से चित्रित किया जाता है।
- तंजौर चित्रकला का एक चित्र 'काष्ठ फलक' पर उत्कीर्ण है, जिसमें राम के राज्याभिषेक को चित्रित किया गया है।

मैसूर चित्रकला (Mysore Painting)

मैसूर चित्रकला

- इस चित्रकला को मैसूर के शासकों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया।
- मैसूर चित्रकला में तंजौर शैली की अपेक्षा अधिक बारीकी होती है। ये चित्र कागज़ पर बनाए जाते हैं।
- इस चित्रकला में भी अधिकांशतः भक्ति भाव के उद्देश्य से पावन चरित्रों, जैसे- देवताओं और देवियों का निर्माण किया गया।
- साथ ही, अलंकरण हेतु व्यापक मात्रा में स्वर्ण धातु का प्रयोग किया गया।

- इसमें मुख्यतया पाँच प्रकार के प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है, जो इस प्रकार है– चावल का आटा (सफेद), चारकोल पाउडर (काला), हल्दी पाउडर (पीला), पीसी हुआ हरी पत्तियाँ (हरा) और हल्दी पाउडर एवं चूना (लाल) का प्रयोग किया जाता है।
- इस चित्रकला का चित्रण उपकरण के उपयोग के बिना ही नंगे हाथों से किया जाता है।

कोहवर और सोहरई चित्रकलाएँ (Kohwar and Sohrai Paintings)

- यह चित्रकलाएँ झारखंड की प्रमुख लोककला हैं।
- दोनों चित्रकलाओं में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता है, जो पेड़ की छाल व मिट्टी (लाल, काला, पीला, सफेद रंग) से बनाए जाते हैं।
- संभवत: वर्तमान की कोहवर कला झारखंड के प्राचीन गुफाचित्रों का ही एक आधुनिक रूप है।
- यह चित्रण पूर्ण रूप से महिलाओं द्वारा किया गया है, जो बहुत ही कलात्मक, स्पष्ट और पठनीय होता है।
- इस चित्रकला के विषय सामान्यत: प्रजनन, स्त्री-पुरुष संबंध, जादू-टोना हैं।
- इसके अतिरिक्त, इस चित्रकला में शिव और मानव आकृतियों के विभिन्न रूपों का चित्रण भी किया जाता है।
- सोहरई पर्व, दीवाली के तुरंत बाद, फसलों की कटाई के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर आदिवासी अपने घर की दीवारों पर चित्र बनाते हैं।

कोहवर चित्रकला

सोहरई चित्रकला

फड़ चित्रकला (Phad Painting)

- फड़ चित्रकला राजस्थान की एक प्रमुख लोक चित्रकला है। इस चित्रकला द्वारा महाकाव्यों के नायकों और देवताओं के जीवन-चरित्रों को लोक गीत-संगीत सहित प्रस्तुत किया जाता है।

फड़ चित्रकला

- इस चित्रकला का चित्रण मुख्यतया कपड़ों पर किया जाता है। इसके अंतर्गत पाबूजी और देवनारायणजी की फड़ अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

गोंड चित्रकला (Gond Painting)

- गोंड चित्रकला को जनजातीय कला के रूप में जाना जाता है। भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक गोंड का संबंध इस चित्रकला से है।

इकाई

6

भारतीय नृत्यकलाएँ
(Indian Dance Arts)

- पृष्ठभूमि
- नृत्य के स्वरूप
- भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ
  - ➤ भरतनाट्यम
  - ➤ कुचिपुड़ी
  - ➤ कथकली
  - ➤ मोहिनीअट्टम
  - ➤ ओडिसी
  - ➤ मणिपुरी
  - ➤ कथक
  - ➤ सत्रिय
- भारत के लोकनृत्य

पृष्ठभूमि (Background)

- नृत्य को सर्वाधिक चित्राकर्षक एवं माधुर्यपूर्ण निष्पादन कला की श्रेणी में रखा जाता है। प्राचीन काल से ही मनुष्य अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिये शारीरिक अंगों की गति और भाव-भंगिमाओं का प्रयोग करता रहा है।
- भीमबेटका से प्राप्त सामुदायिक नृत्य संबंधी नक्काशियाँ तथा सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त नर्तकी की कांस्य प्रतिमा यह सिद्ध करती है कि प्रागैतिहासिक काल से ही नृत्यकला का प्रयोग होता रहा है। इसी प्रकार, पौराणिक ग्रंथों एवं गाथाओं में तांडव नृत्य करते हुए नटराज शिव का भी वर्णन मिलता है।
- नृत्य का पहला औपचारिक वर्णन भरतमुनि की प्रसिद्ध कृति 'नाट्यशास्त्र' (200 ईसा पूर्व से 200 ई.) से मिलता है। इस कृति में भारतीय शास्त्रीय नृत्य के विभिन्न पहलुओं को वर्णित किया गया है। साथ ही, नृत्य से संबंधित तकनीकों, मुद्राओं, आभूषणों, मंचों एवं दर्शकों के बारे में भी विस्तृत वर्णन किया गया है।
- भरतमुनि नृत्य को पूर्ण कला की संज्ञा प्रदान करते हैं, जिसमें संगीत, शिल्पकला, काव्य एवं नाट्यकला समावेशित हैं। इनके नाट्यशास्त्र के अनुसार, भगवान ब्रह्मा ने चारों वेदों के कुछ पहलुओं को मिलाकर नाट्य वेद की रचना की। नाट्य वेद में ऋग्वेद से पथ्य (शब्द), यजुर्वेद से अभिनय (भंगिमाएँ), सामवेद से गीत (संगीत) तथा अथर्ववेद से रस (भाव) को समावेशित किया गया है।

नृत्य के स्वरूप (Forms of Dance)

- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार, भारतीय शास्त्रीय नृत्य के दो आधारभूत स्वरूप लास्य एवं तांडव हैं। नारी अभिमुखताओं के प्रतीक के रूप में नृत्यकला के स्वरूप में लास्य, लालित्य, भाव, रस एवं अभिनय को सम्मिलित किया जाता है। वहीं दूसरी तरफ, पुरुष अभिमुखताओं (वीर, निर्भीक और ओजस्वी) के प्रतीक के रूप में नृत्यकला के स्वरूप में तांडव, लय तथा गति पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
- पौराणिक गाथाओं में वर्णित शिव-पार्वती के नृत्य को ही क्रमशः तांडव एवं लास्य नृत्य कहा जाता है। उग्र व वीर तांडव नृत्य की प्रकृति है, जबकि सुकुमार और कोमल लास्य नृत्य की प्रकृति है, जो क्रमशः पुरुष और स्त्री के गुणों को स्थापित करते हैं।

➤ जलचित्र नृत्य के अंतर्गत नर्तक/नर्तकी अपने पैर के अँगूठे से सतह पर चित्र को अंकित करते हैं।

- इस नृत्य शैली को कर्नाटक संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें वायलिन, वीणा, मंजीरा एवं मृदंग वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
- बालासरस्वती, रागिनी देवी, राधा रेड्डी, राजा रेड्डी, यामिनी कृष्णमूर्ति, इंद्राणी रहमान आदि ने इस विधा को विशेष प्रसिद्धि दिलाई।

कथकली (Kathakali)

- कथकली एक प्रचलित नृत्य रूप है, जिसका विकास प्राचीन काल में दक्षिणी प्रदेशों में प्रचलित सामाजिक और धार्मिक रंगमंचीय कला रूपों से हुआ माना जाता है। कथकली शब्द की उत्पत्ति 'कथा' अर्थात् कहानी एवं 'कली' अर्थात् नाटक से हुई है।
- केरल के मंदिरों में सामंतों के संरक्षण में चाकियारकुत्त, कूडियात्तम, रामानाट्टम और कृष्णानाट्टम के रूप में लोकनृत्य-नाट्यकलाओं का विकास हुआ, जो आगे चलकर कथकली के उद्भव के स्रोत बनें।

स्त्री पात्र एवं पुरुष पात्र के क्रमशः खड़े होने की मूल स्थिति

- केरल के मंदिरों के शिल्पों और भित्तिचित्रों में इससे जुड़े दृश्यों को देखा जा सकता है। सोलहवीं सदी के मट्टानचेरी मंदिर के भित्तिचित्रों में कथकली की विशेषताओं को प्रदर्शित किया गया है।
- सामंती व्यवस्था के पतन के साथ ही इस नृत्य विधा का भी अवसान होने लगा, जिसे पुनर्जीवित करने का श्रेय मुकुंद राजा के मलयाली कवि 'वी.एन. मेनन' को दिया जाता है।

कृष्ण के साथ राधा

- कथकली नृत्य मूल रूप से पुरुष प्रधान नृत्य था, जिसे रागिनी देवी ने महिलाओं का नृत्य भी बना दिया।
- इसके अंतर्गत अच्छाई एवं बुराई के मध्य शाश्वत संघर्ष की प्रस्तुति की जाती है। इस नृत्य में दो पात्र होते हैं– नायक, जिसे 'पाचा' कहते हैं और खलनायक, जिसे 'केथी' कहते हैं।
- इस नृत्य की विषयवस्तु महाकाव्यों और पुराणों से उद्धृत कहानियों पर केंद्रित है, जिसे पूर्व का 'गाथागीत' भी कहा जाता है।
- इस नृत्य में संगीत और अभिनय का मिश्रण होता है, जिसे नर्तक अपनी हस्तमुद्राओं और मुख के भावों से अभिव्यक्त करता है। इसके बाद पद्यात्मक भाग आता है, जिसे गाया जाता है।
- इस नृत्य के दौरान आँखों और भृकुटियों की गति के माध्यम से अनेक रसों का प्रदर्शन किया जाता है, जिसके लिये कठिन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस शैली के अतिरिक्त किसी भी अन्य नृत्य शैली में पूरी तरह से शरीर के सभी अंगों का प्रयोग नहीं होता है। किसी अन्य नृत्य में चेहरे की मांसपेशियों से लेकर अंगुलियों, आँखों, हाथ और कलाई की गति का इतना प्रयोग नहीं होता, जितना इसमें होता है।
- इसमें रंगमंचीय सामग्रियों का न्यूनतम प्रयोग होता है, लेकिन विभिन्न चरित्रों/पात्रों के लिये मुकुट का प्रयोग किया जाता है। साथ ही, मुख पर अत्यधिक मात्रा में शृंगार किया जाता है।

- इसमें प्रचलित पाँच 'रास' नृत्यों में से चार का संबंध विशिष्ट ऋतुओं से है, जबकि पाँचवें को किसी भी समय प्रस्तुत किया जा सकता है।
- इसमें रासलीला के प्रस्तुतीकरण प्रमुख रूप से किया जाता है। रासलीला में कृष्ण, राधा और गोपियाँ मुख्य पात्र होते हैं।
- इस नृत्य में सामूहिक गान के कीर्तन रूप को 'संकीर्तन' नृत्य के नाम से जाना जाता है। इस दौरान पुरुष नृत्य करते समय पुंग और करताल बजाते हैं। इस संकीर्तन परंपरा को पुंग कोलम और करताल कोलम कहते हैं।

राधा-कृष्ण

पुंग कोलम

करताल कोलम

- इस नृत्य के एक अन्य रूप के अंतर्गत युद्ध संबंधी नृत्य थंग-टा सम्मिलित होता है। यह नृत्य उस समय उत्पन्न हुआ, जब मनुष्य ने जंगली पशुओं से अपनी रक्षा करने के लिये अपने सामर्थ्य पर निर्भर रहना शुरू किया। इस नृत्य में नर्तक द्वारा तलवारों, भालों और ढालों का उपयोग किया जाता है।
- आधुनिक काल में रवींद्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन में इस नृत्य को प्रस्तुत किया, जिससे इसकी ख्याति में और भी वृद्धि हुई।

थंग-टा

कथक (Kathak)

- उत्तर प्रदेश की परंपरागत नृत्यकला 'कथक' का विकास ब्रजभूमि की रासलीला से हुआ। कथक का नाम कथिका, अर्थात् कथावाचक शब्द से लिया गया है।
- इसमें भाव-भंगिमाओं तथा संगीत के साथ महाकाव्यों से उद्धृत कविताओं पर प्रस्तुति की जाती है। इस नृत्य की विषयवस्तु वैष्णव धर्म पर आधारित है।
- मुगल काल में शास्त्रीय नृत्य की यह शैली कामोत्तेजक स्वरूप में बदल गई तथा इसे दरबारी नृत्य के रूप में जाना जाने लगा। इसी दौरान इस पर फारसी वेशभूषा एवं अन्य नृत्य कलाओं का भी प्रभाव पड़ा।
- अब यह शैली मंदिरों के साथ-साथ महलों के दरबारों में भी पहुँच गई। हिंदू और मुस्लिम दोनों वर्गों द्वारा संरक्षित यह शैली मनोरंजन के विशिष्ट रूप में विकसित हुई।

कथक नृत्य की मुद्राएँ

- बीसवीं सदी में लेडी लीला सोखे को कथक नृत्य की शास्त्रीय शैली को पुनर्जीवित करने का श्रेय जाता है।
- उन्नीसवीं सदी में अवध के अंतिम नवाब वाज़िद अली शाह के संरक्षण में इस नृत्य का स्वर्णिम युग देखने को मिलता है। इस घराने में अभिव्यक्ति और लालित्य पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इस घराने को प्रसिद्धि दिलाने का मुख्य श्रेय पंडित लच्छू महाराज और पंडित बिरजू महाराज को जाता है।
- भानुजी द्वारा शुरू किये गए जयपुर घराने में प्रवाह, गति एवं लंबे लयबद्ध पैटर्न पर अधिक बल दिया जाता है।

प्रमुख लोकनृत्य	प्रचलित राज्य	महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ
छऊ नृत्य	झारखंड में सरायकेला छऊ नृत्य, ओडिशा में मयूरभंज छऊ नृत्य और पश्चिम बंगाल में पुरुलिया छऊ नृत्य	• यह नृत्य वार्षिक सूर्य पूजा के अवसर पर किया जाता है। • इस नृत्य में रामायण, महाभारत और पुराणों की कथाओं को प्रस्तुत किया जाता है। • इसे 'मुखौटा नृत्य' के रूप में भी जाना जाता है। • लोक जीवन से जुड़े इस नृत्य में कलाकारों की भाव-भंगिमा, लय-ताल तथा उमंग देखते ही बनता है। • सरायकेला और पुरुलिया छऊ नृत्य के विपरीत मयूरभंज छऊ नृत्य के कलाकार मुखौटा नहीं पहनते हैं। • वर्ष 2011 में यूनेस्को ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में छऊ नृत्य को सम्मिलित किया है।
डांडिया नृत्य	गुजरात	• इस प्रसिद्ध लोकनृत्य को नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है। • इसमें डांडिया का प्रयोग करके नृत्य किया जाता है। • इस नृत्य के माध्यम से दुर्गा और महिषासुर के मध्य छद्म-युद्ध का चित्रण किया जाता है, जिसमें देवी दुर्गा की तलवार के प्रतीक के रूप में डांडिया को माना जाता है।
घूमर नृत्य	राजस्थान	• प्रसिद्ध एवं परंपरागत नृत्य घूमर को मुख्य रूप से भील जनजाति की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। • इसमें महिलाएँ शुभ अवसरों पर चक्राकार गति से नृत्य करती हैं। • इसमें केवल महिलाएँ ही भाग लेती हैं, जिनमें लहँगे के घेर और हाथों का संचालन अत्यंत विशिष्ट होता है।
कुडियाट्टम नृत्य	केरल	• इस नृत्य में कलाकारों का समूह नृत्य नाटक की प्रस्तुति करता है। • इस नृत्य में महिला और पुरुष दोनों की भागीदारी होती है। • इस नृत्य का महत्त्वपूर्ण तत्त्व अभिनय होता है। • इस नृत्य को परंपरागत रूप से 'चाकयार' और 'नंपियार' जातियों द्वारा किया जाता है। • मंदिरों में प्रस्तुति के कारण इस नृत्य को 'कुथांबालम' कहा गया।
भांगड़ा नृत्य	पंजाब	• यह अत्यधिक ऊर्जावान नृत्य है। • इसे ढोल की धुन पर किया जाता है। • इस नृत्य को फसल कटाई, वैवाहिक समारोह एवं नववर्ष के अवसर पर मुख्य रूप से किया जाता है।

प्रमुख लोकनृत्य	प्रचलित राज्य	महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ
चरकुला नृत्य	उत्तर प्रदेश	• यह ब्रज क्षेत्र का प्रमुख लोकनृत्य है। • इसे होली या उसके दूसरे दिन रात्रि में आयोजित किया जाता है। • इस नृत्य में महिलाएँ सिर पर दीपक को रखे हुए गोलाकार पात्र के साथ प्रस्तुति देती हैं।
कर्मा नृत्य	छत्तीसगढ़	• यह आदिवासियों का एक प्रमुख लोकनृत्य है। • इसे वर्षा ऋतु के अलावा अन्य सभी ऋतुओं में प्रस्तुत किया जाता है। • नृत्य को नई फसल आने की खुशी में किया जाता है।
दलखई लोकनृत्य	ओडिशा	• यह पश्चिमी ओडिशा में जनजातियों का चर्चित लोकनृत्य है। • यह नृत्य विवाहित स्त्रियों द्वारा अपने भाई की लंबी आयु के लिये किया जाता है।
देवरनत्तम नृत्य	तमिलनाडु	• इसे राजा के युद्ध से विजयी होकर आने पर किया जाता था। • इसे वीरपांड्या राजवंश ने संरक्षण प्रदान किया। • इसमें अब कोई गीत नहीं होते केवल उरुमी मेलम तथा थप्पू मेलम नामक वाद्ययंत्रों की ताल पर नृत्य किया जाता है।
अग्नि नृत्य	राजस्थान	• यह नृत्य अग्नि के धधकते अंगारों के बीच किया जाता है। • इस नृत्य में केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। • इस नृत्य को जसनाथी संप्रदाय के जाट सिद्धों द्वारा किया जाता है।
गैर नृत्य	राजस्थान	• इस नृत्य को फाल्गुन माह में किया जाता है। • यह लकड़ी को हाथों में लेकर गोल घेरे में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
कच्छी घोड़ी नृत्य	राजस्थान	• नर्तक बाँस की संरचना पर कागज़ की लुगदी से बने घोड़े की संरचना को कमर में बाँधकर नृत्य करते हैं। • यह राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र का प्रमुख लोकनृत्य है।

संस्कृति IAS

अखिल मूर्ति के निर्देशन में

पढ़िये देश की सर्वश्रेष्ठ टीम से!

दिल्ली के साथ अब प्रयागराज में भी...

श्री अखिल मूर्ति इतिहास कला एवं संस्कृति	श्री अमित कुमार सिंह (IGNITED MINDS) एथिक्स	श्री ए.के. अरुण भारतीय अर्थव्यवस्था	श्री सीबीपी श्रीवास्तव (DISCOVERY IAS) राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय गवर्नेंस, आंतरिक सुरक्षा
श्री कुमार गौरव भूगोल, पर्यावरण आपदा प्रबंधन	श्री राजेश मिश्रा भारतीय राजव्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय संबंध	श्री रीतेश आर जायसवाल सामान्य विज्ञान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	श्री विकास रंजन (TRIUMPH IAS) सामाजिक मुद्दे

सामान्य अध्ययन

फाउन्डेशन कोर्स (प्रिलिम्स+मेन्स)

लाइव बैच भी उपलब्ध

वैकल्पिक विषय

इतिहास
द्वारा – श्री अखिल मूर्ति

भूगोल
द्वारा – श्री कुमार गौरव

राजनीति विज्ञान
द्वारा – श्री राजेश मिश्रा

दर्शन शास्त्र
द्वारा – श्री अमित कुमार सिंह (IGNITED MINDS)

सीसैट

कुल कक्षाएँ
120+
नियमित रिवीज़न

सामान्य अध्ययन एवं वैकल्पिक विषयों के लिये ऑनलाइन/पेनड्राइव कोर्स भी उपलब्ध

यूपीएससी एवं यूपीपीसीएस प्रारंभिक परीक्षा
टेस्ट सीरीज़
ऑफलाइन/ऑनलाइन

सामान्य अध्ययन एवं सीसैट
हिंदी एवं अंग्रेज़ी दोनों माध्यम

Demo एक निःशुल्क डेमो टेस्ट
sanskritiIAS.com
sanskritiIAS app

हेड ऑफिस
636, भू-तल,
मुखर्जी नगर, दिल्ली-09

9555-124-124

प्रयागराज केंद्र
7/3/AA/1, ताशकंद मार्ग,
पत्रिका चौराहा, प्रयागराज, उ.प्र.